उपसंहार

किसी भी कला की आधारभूमि परिवेशगत और समकालीन परिस्थितियों के द्वारा निर्मित होती है।नुक्कड़ नाटक भी एक ऐसी ही प्रदर्शनकारी कला के रूप में सामने आया, जिसका का आधार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से निर्मित था। स्वतंत्रता के बाद देश में लोकतंत्र की स्थापना के साथ आदर्श जनतांत्रिक व्यवस्था, वर्गहीन समाजव्यवस्था, समाजवादी अर्थव्यवस्था और संविधान के माध्यम से जनता के लोकतान्त्रिक जनवादी मूल्यों और अधिकारों को सुरक्षित रखने के सरकारी प्रयास किए गए। जनता को आश्वासन दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर अपनी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मुक्ति पा सकेगा, लेकिन देश के विभाजन, साम्प्रदायिक वैमनस्य, जातिगत विद्वेष, प्रांतीय विवाद, भाषागत संघर्ष, राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक अराजकता और सामाजिक विसंगतियों ने इन प्रयासों और आश्वासनों को निरर्थक बना दिया और जिसने लाखों लोगों को भावनात्मक, विचारात्मक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और आत्मिक स्तरों पर प्रभावित किया। जिससे जनमानस में आशा और उत्साह के स्थान पर निराशा, अशांति और अनिश्चितता व्याप्त होने लगी। सत्ता अपने हितों के लिए जनता के जनवादी अधिकारों का हनन करने लगी।

जनता के मानवीय मूल्यों और अधिकारों को बचाए रखने और उनके अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के विचार से जन आंदोलनों के सांस्कृतिक औज़ार के रूप में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत हुई। जिसका उद्देश्य समाज में व्याप्त शोषण, भ्रष्टाचार, विसंगतियों, जड़ सामंती मूल्यों, नीतियों का विरोध कर जनता के प्रतिरोधी स्वर को बुलंद करना था। विश्व में फासीवाद, साम्राज्यवाद के बढ़ते प्रभाव ने देश में इप्टा और प्रलेस जैसे जनवादी संघों के माध्यम से जन-आंदोलनों को एक प्रगतिशील परम्परा के रूप में पुनर्जीवित किया गया और आपातकाल के दौरान राष्ट्रीय फलक पर

सांस्कृतिक आन्दोलन के रूप में नुक्कड़ नाटक एक नए विकल्प और आयाम के रूप में इनसे जुड़ गया।

नुक्कड़ नाटक ने प्राचीन परम्परागत रंगमंच की प्रक्रिया को तोड़कर एक सशक्त विधा के रूप में जनता के बीच जनता की बात को उठाया। यह जनसमूह की पीड़ा, आक्रोश और आशाओं को जीता है और हाशिए के समाज की आवाज़ बनता है। देश में नुक्कड़ नाटक आन्दोलन समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की देन है। आर्थिक विषमता, श्रमजीवी वर्ग के शोषण, किसानों-मजदूरों पर सामंती अत्याचार, दलित व महिला उत्पीड़न, अशिक्षा और बेरोज़गारी की समस्या, मानवीय मूल्यों के विघटन, सामाजिक कुरीतियों, रुढियों, अंधविश्वासों और पाखंडी शक्तियों के विरुद्ध में एक प्रतिरोधी कला के रूप में नुक्कड़ नाटक का जन्म हुआ। आम जनता को समाज की वास्तविकताओं से अवगत कराते हुए, उनमें अपने आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए जनचेतना को जागृत करना नुक्कड़ नाटक का उद्देश है। नुक्कड़ नाटक प्रतिरोधात्मक क्रान्तिकारी विचार, शक्ति, संवेदना और दृष्टिकोण के रूप में सहज और सटीक वाहक की भूमिका निर्वाह करता है।

७० और ८० के दशक में नुक्कड़ नाटक के सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों को बिहार का छात्र आन्दोलन, नक्सलबाड़ी आन्दोलन, पंजाब का कृषक आन्दोलन, तेलंगाना आन्दोलन और आपातकालीन आन्दोलन के जनसंघर्षों के तौर पर देखा जा सकता है। ८० के दशक के दौरान व्यापक स्तर पर उत्पन्न जनवादी आंदोलन के तहत अनेक नुक्कड़ नाटककार, उनके द्वारा लिखे गए अनेक नुक्कड़ नाटक और विभिन्न नाट्य संस्थाओं ने जनता को जनचेतना के लिए जागृत किया।

नुक्कड़ नाटक की जनवादी विचारधारा ने जनपक्षधर, सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थाओं से लेकर कला, साहित्य और संस्कृति को भी गहरे रूप में प्रभावित किया है। अभिजनवाद के विरुद्ध जनवाद की अवधारणा ने सर्वहारा वर्ग, शोषित- दलित जनता को शोषक- दमनकारी व्यवस्था, पूँजीवादी की नीतियों, आर्थिक अराजकता, सामाजिक रूढ़ियों व मान्यताओं के विरुद्ध जनता को जागृत किया। कला के क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक ने 'कला समाज के लिए' की अवधारणा को बदलते सामाजिक., राजनीतिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में अपने नाटकों के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। कला और साहित्य के क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक को अधिक सम्मान, प्रतिष्ठा और महत्त्व ना मिलने का कारण साहित्य में इसे नाटक विधा ना मानना और रंग समीक्षकों व आलोचकों द्वारा इसकी रचना और प्रस्तुति पर प्रश्न उठाना रहा है।

आज बदलते दौर में जहाँ नुक्कड़ नाटक की लोकप्रियता आम आदमी से लेकर स्कूल, कॉलेजों, नाट्य विद्यालयों और विभिन्न संस्थाओं में व्यापक स्तर पर बढ़ी है, वहीं ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में संचार के विभिन्न माध्यमों में मिडिया के बढ़ते प्रभाव ने नुक्कड़ नाटक जैसे कला माध्यमों का प्रभाव जन सामान्य के बीच कम कर दिया है। इलेक्ट्रोनिक मिडिया के उपकरणों रेडियो, टी.वी., कंप्यूटर, स्मार्ट फोन, मोबइल और सोशल मिडिया के फेसबुक, गूगल, वट्स-अप, ट्विटर, यू-ट्यूब जैसी वेबसाइटों के बढ़ते प्रयोगों ने जहाँ युवा वर्ग को साहित्य और कला जैसे सामाजिक माध्यमों से दूर किया है, वहीं उनके अभिव्यक्ति के दायरे को सीमित करते हुए उन्हें आत्मकेन्द्रित बना दिया है। भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के दौर ने आधुनिकता के मानदंडों को बदल दिया है। मानव जीवन इतना गतिशील हो गया है कि जीवन में आगे निकलने और अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु व्यक्ति अपने मूल्यों, अधिकारों और दायित्व को भी भूलता जा रहा है। व्यैक्तिकता के प्रभाव ने समाज में पारिवारिक विघटन, अकेलापन, मूल्यहीनता, नई-पुरानी पीढ़ी के बीच वैचारिक संघर्ष, शैक्षिक

मूल्य-विघटन जैसी समस्याओं का वर्चस्व बढ़ा दिया है। व्यावसायिकता के बढ़ते प्रभाव ने नुक्कड़ नाटक को प्रचार-प्रसार का माध्यम बना दिया है। राजनीतिक क्षेत्र में चुनाव के समय अपने दल के प्रचार के लिए, आर्थिक स्तर पर व्यापारिक कम्पनियाँ अपने उत्पादन के प्रचार के लिए, सरकारी-गैर सरकारी संस्थाएँ अपनी योजनाओं, नीतियों, निजी कार्यों के प्रचार हेतु, विज्ञापन, फिल्मों के प्रचार के लिए भी नुक्कड़ नाटक का प्रयोग साधन मात्र के रूप में हो रहा है। आज शैक्षिक कार्यक्रमों में नुक्कड़ नाटक को प्रतियोगता, संगोष्टी और सेमिनार का रूप दे दिया है। पत्र-पत्रिकाओं में नुक्कड़ नाटक के सन्दर्भ में छपते लेखों का दायरा भी सीमित हो गया है। आज नुक्कड़ नाटक की रचना और प्रस्तुति की तुलना मंचीय नाटक से की जा रही है। जिसके कारण इसके कथ्य और शिल्प को लेकर सवाल उठने लगे है। बेरोज़गारी की समस्या ने नुक्कड़ नाटककारों और रंगकर्मियों को इस जनवादी विधा का व्यवसायीकरण करने को मज़बूर कर दिया है। आज विभिन्न नाट्य संस्थाएँ नए कलाकारों को जहाँ अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान कर रही है, वहीं रोज़गार के विकल्प के रूप में भी उभर कर सामने आ रही है।नुक्कड़ नाटक का यह उपयोग उसकी प्रतिरोधात्मक छवि को उससे छीन रहा है। ऐसे में आज नुक्कड़ नाटक के सामने अपने अस्तित्व और सार्थकता को बचाए रखने का प्रश्न उठने लगा है।

नुक्कड़ नाटक का स्वरूप भले ही आज बदल रहा हो, लेकिन आज भी यह जनता के बीच अपने स्थान को बनाए हुए है। आज 'ग्लोबल वर्ल्ड' के नकारात्मक प्रभाव ने शोषण के रूप को बदल दिया है जिसके कारण आज भी मानव के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश में विसंगतियाँ, विषमताएँ, अराजकता, मूल्यहीनता की समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी हुई है। भूमंडलीकृत पूँजीवादी व्यावसायिकता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, महंगाई, जातिगत असमानता, सर्वहारा वर्ग का शोषण, दलित उत्पीड़न, महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार, घरेलू हिंसा, बलात्कार-कांड, शैक्षिक असमानता और स्वास्थ्य व पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के मुद्दों को आज भी नुक्कड़

नाटक का विषय बनाकर जनता को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। आज नुक्कड़ नाटक के सामने विभिन्न चुनौतियाँ तो है ही मगर इसकी तत्कालिकता, गतिशीलता, जुझारू चेतना, लोक सम्पृक्तिता, परिवर्तनशीलता, कथ्य और शिल्प की सुघड़ता और जनपक्षधरता व सामाजिक प्रतिबद्धता जैसी विशेषताओं ने इसे एक जीवंत दस्तावेज़ के रूप में आज भी जनता के बीच सक्रिय बनाया हुआ है। आज नुक्कड़ नाटक का स्वरूप बदल गया है। इसके कथ्य के साथ-साथ इसके शिल्प को लेकर भी नवीन प्रयोग किए जा रहे है। जहाँ आज इसकी स्क्रिप्ट की कमी को दूर करने में 'नुक्कड़ नाटक', 'पांच नुक्कड़ नाटक', 'ग्यारह नुक्कड़ नाटक', 'जनता के बीच जनता की बात' जैसे नुक्कड़ नाटक संग्रह प्रकाशित किए जा रहे है, साहित्यिक व रंगमंचीय पत्र पत्रिकाओं में भी इससे सम्बन्धित लेख छप रहे है, वहीं शिल्प के क्षेत्र में इसकी भाषा-संवाद शैली को आम आदमी की बोली से जोड़कर, गीत में गद्य शैली व कोरियोग्राफी का प्रयोग, वस्त्र-संयोजन में नए प्रयोग, प्रोपर्टी के रूप में मुखौटों, दुपट्टों, टोपी या कोई अन्य वस्तु का प्रयोग नुक्कड़ नाटक की सृजनात्मक रूप को सामने ला रहा है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगताओं, नाटक वर्कशॉप, सेमिनार, संगोष्ठियों आदि के आयोजनों से नुक्कड़ नाटक के क्षेत्र में नई संभावनाएँ तलाश की जा रही है।

अत: कहा जा सकता है किआज के बदलते दौर में भी नुक्कड़ नाटक जैसी संघर्षशील कला ने जनता के बीच अपनी जीवंतता, सार्थकता, अनिवार्यता और अस्तित्व को बनाए रखा है। समाज में नुक्कड़ नाटक की सक्रियता को बनाए रखने के लिए इसके क्षेत्र में नए प्रयोगों, संभावनाओं, सामाजिक प्रतिबद्धता और वैचारिक सैद्धांतिकता पर गंभीर विचार करना आवश्यक हो गया है।जब तक समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्तर पर विषमता, अराजकता और वैषम्य है, संस्कृतिकर्मियों के लिए सामाजिक सरोकारों की चुनौती व जिम्मेदारी के तर्क बने रहेंगे और तब तक बना रहेगा नुक्कड़ नाटक का औचित्य भी।